6- महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?

उत्तर- महामारी के कारण प्रत्येक घर से लाशें उठ रही थी। मौत का तांडव चारों तरफ नजर आ रहा था। सूर्योदय के समय लोगों को यह जानने की उत्सुकता होती थी कि किस-किस की जान बची है। सभी लोग एक दूसरे को सांत्वना देते थे और हिम्मत बढ़ाते थे।

वही सूर्यास्त के समय लोग अपनी अपनी झोपड़ी में चले जाते। रात्रि का सन्नाटा इतना गहरा होता कि मुंह बोलने की शक्ति भी जाती रहती। पास पड़े बेटे को दम तोड़ते हुए देखकर उसे बेटा पुकारने की भी हिम्मत नहीं होती। इस तरह सूर्योदय होते समय जहाँ लोगों के अंदर थोड़ा उत्साह और हिम्मत होता, वही सूर्यास्त के समय वे निर्बल और उत्साहीन हो जाते।

7- कुश्ती या दंगल पहले लोगों और राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था। पहलवानों को राजा एवं लोगों के द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता था—

(क)- ऐसी स्थिति आज क्यों नहीं है-

उत्तर- कुश्ती या दंगल राजाओं का पहले प्रिय शौक हुआ करता था। पहलवानों को राजा लोग प्रोत्साहित करने के लिए विशेष सम्मान देते थे लेकिन आज की स्थिति में खेल की इस विधा को अनदेखा किया जा रहा है। भागदौड़ की जिंदगी में लोगों के पास समय न होने के कारण यह प्राचीन संस्कृति लुप्त होती जा रही है क्योंकि अपने देश संस्कृति और खेलों के प्रति लोगों में मानसिक संवेदनाएँ धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

(ख)- इसकी जगह किन खेलों ने ले ली है?

उत्तर- कुश्ती या दंगल की जगह आज आधुनिक खेलों ने अपनी पकड़ बना ली है। ग्रामीण संस्कृति के खेल जैसे- कबड्डी,

खो-खो आदि की जगह क्रिकेट, फुटबॉल, मोटर रेस आदि खेलों खेलती हैं। ये खेल लोगों को ज्यादा सम्मोहित कर रहे हैं।

(ग)- कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं?

उत्तर- कुश्ती को प्रिय खेल बनाने के लिए निम्न प्रयास किए जा सकते हैं—

(i)- कुश्ती या प्राचीन खेलों को लोकप्रिय बनाने के लिए सुदृढ़ योजनाएँ बनानी चाहिए।

(ii)- मीडिया को इन खेलों का प्रसारण राष्ट्रीय स्तर पर करना चाहिए।

(iii)- राष्ट्रीय खेलों में कुश्ती जैसे खेलों को भी सम्मिलित करना चाहिए तथा पहलवानों को रोजगार के अवसर प्रदान करना चाहिए।

(iv)- भावी पहलवानों को समयानुसार प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए।

8- आशय स्पष्ट करें—

आकाश से ... पड़ते थे।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियों में रात्रिकालीन दृश्य का चित्रण है। अमावस्या की काली ठंडी रात में रह रह कर तारे टिमटिमा रहे थे। धरती पर कहीं भी रोशनी का नामोनिशान नहीं था। आकाश से कोई तारा चाह कर भी पृथ्वी पर नहीं आ सकता था क्योंकि उसकी रोशनी और ताकत रास्ते में ही गहन अंधकार में विलुप्त हो जाती। उसके इस प्रयास में मानो आकाश के अन्य तारे खिलखिला कर हँस पड़ते थे।